लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या:3; जुलाई-दिसंबर, 2021

असम के विशिष्ट हिन्दी सेवी गोलोक चन्द्र वैश्य का साक्षात्कार

साक्षात ग्रहण: डॉ. मालविका शर्मा

डॉ॰ मालविका शर्मा- *नमस्कार सर। आज आपसे आपके जीवन और कर्म के बारे में कुछ बातें करने आयी हूँ।*

गोलोक चन्द्र वैश्य- नमस्कार।आपका स्वागत है। जितना हो सके मैं बताने का प्रयास करूंगा।

गोलोक चन्द्र वैश्य

डॉ॰ मालविका शर्मा- *जहाँ तक मेरी जानकारी है, आपने एक छोटे से गाँव से आकार यहाँ तक का लक्ष्य तय किया है। वहाँ से आकर कैसे आप हिन्दी के अथक सेवक बने?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- सही कहा। हमारे पिताजी कामरूप जिले के दलिबारी गाँव के भूमिहीन किसान थे। हम दो भाई थे और हमारी पाँच बहनें थीं। हम सभी कृषि के काम में माँ और पिता जी की मदद करते थे। हमारे घर में कर्म ही धर्म था, पढ़ना जरूरी नहीं माना गया था। हम दोनों भाइयों ने हल चलाने में बचपन से ही पिता जी का साथ दिया था। सुबह उठकर हल लेकर हम दोनों पिता जी के साथ खेत जाया करते थे। खेत के पास से गुजरनेवाली रेल हमें स्कूल जाने के समय का संदेश दे जाती थी। उस रेल की आवाज सुनते हम हल छोड़ घर की ओर भागते थे। खाने के लिए माँ कुछ न कुछ तैयार रखती थीं। उनमें से कुछ मुँह में डालकर फिर स्कूल के लिए दौड़ते। स्कूल जाने को लेकर घर से कुछ पाबंदी नहीं थी। पर मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता था। माँ भी मुझे शिक्षित देखना चाहती थीं। मैं अपने भाई के साथ शुवालकुछि, आमिनगाँव, पांडु, चेचामुख, पलाशबारी, मालिगाँव, आदि के बाज़ारों में साग-सब्जी, बैंगन, मुली, आलू, गोभी, टमाटर आदि विभिन्न सामान बेचने जाता था। अक्सर शनिवार को हमें स्कूल छोड़कर समान बेचने बाजार जाना पड़ता

था। घर के सदस्यों को जीवित रखने के लिए हमें ऐसे ही काम करना पड़ता था। पर नियति की इच्छा कुछ ओर ही थी और उस पर मेरे कर्म का साथ मिला।

डॉ॰ मालविका शर्मा - *आपको स्कूल छोड़कर सब्जियाँ बेचने जाना पड़ता था। फिर हिन्दी विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त की। आपने यह लक्ष्य कैसे तय किया?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- मनुष्य की इच्छाशक्ति सब कुछ संभव कर सकती है। जिस गाँव और परिवार से मैं था, मुझे पता था कि शिक्षा ही मेरा अंतिम आश्रय हो सकता है। इसीलिए कभी मैंने पढ़ाई नहीं छोड़ी। पढ़ना और पढ़ाना साथ-साथ चलते रहे। मैं पढ़ता भी था और पढ़ाई का खर्च निकालने के लिए किसी न किसी को पढ़ता था। पी. यू. तक मैंने गाँव में ही पढ़ाई की। मैंने दलिबारी प्राथमिक विद्यालय से एल. पी. और एम. ई., दमदमा हाईस्कूल से मैट्रिकुलेशन, शुवालकुछि के एस. बी. एम. एस. कॉलेज से पी. यू. पास किया। फिर प्रागज्योतिष महाविद्यालय से बी. ए. पहला खंड, बी. बरुवा महाविद्यालय से बी. ए. दूसरा खंड और गौहाटी विश्वविद्यालय से सन् 1974 में हिन्दी विषय में एम. ए. पास किया। पढ़ाई के दौरान मैं अध्यापन भी करता रहा। सन् 1963 के जून से सन् 1964 के जनवरी तक 1139 न. मारकाङ एल. पी. स्कूल के प्रधान शिक्षक पद पर मैंने काम किया। फिर सन् 1965 के फरवरी से सन् 1966 के जनवरी तक आमिनगाँव एम. ई.स्कूल में हिन्दी शिक्षक पद पर मैंने सेवा की। फिर सन् 1966 के 14 फरवरी से 29 फरवरी, 2004 तक कामरूप अकादेमी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में वरिष्ठ हिन्दी शिक्षक के रूप में सेवा की, वहाँ से ही मैं सेवानिवृत्त हुआ।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *हिन्दी की प्रारंभिक शिक्षा आपने कहाँ से शुरू की?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- दमदमा हाईस्कूल में पढ़ते समय उस स्कूल के पूज्य हिन्दी शिक्षक स्व॰ रमेश दास से हिन्दी सीखकर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की 'परिचय' परीक्षा पास की। उत्तर गुवाहाटी महाविद्यालय में पढ़ते समय वहाँ के कमलदेव हाईस्कूल के पूज्य हिन्दी शिक्षक स्व॰ शशीमोहन भट्टाचार्य से अनुप्रेरित होकर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की 'प्रवेशिका' परीक्षा पास की।

उसके बाद हँहरा एम.ई. स्कूल के हिन्दी शिक्षक स्व॰ गजेंद्र नाथ तालुकदार से अनुप्रेरित होकर हिन्दी सीखने के लिए सन् 1961 में 'सरकारी हिन्दी प्रशिक्षण केंद्र, दिफु'

गया। वहाँ से मैं 'शिक्षा विशारद' के साथ असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की 'विशारद' की परीक्षा पास की। फिर सन् 1968 में मैंने 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' से 'राष्ट्रभाषा रत्न' की उपाधि ली है।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *फिर आपने हिन्दी में उच्च शिक्षा ग्रहण करने का फैसला किया?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- सन् 1965 में बी. ए पढ़ते समय मेरा प्रागज्योतिष महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के मुख्य अध्यापक पूज्य गुरुजी हीरालाल तिवारी जी से परिचय हुआ। उनसे अनुप्रेरित होकर मैंने हिन्दी साहित्य में बी. ए की डिग्री हासिल की। उसी समय तिवारी जी गुवाहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रमुख बने। उन्हीं से अनुप्रेरित होकर मैंने हिन्दी विषय पर एम. ए की डिग्री हासिल की।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *उच्च शिक्षा की समाप्ति के बाद आप हिन्दी के प्रचार में निरंतर लगे हुए हैं। आप इस यात्रा के बारे में थोड़ा बयाएं।*

गोलोक चन्द्र वैश्य- जैसा मैं पहले बता ही चुका हूँ कि मैंने सन् 1966 से 2004 तक कामरूप अकादेमी उच्चतर माध्यमिक स्कूल में हिन्दी शिक्षक पद पर सेवा की है। उसी समय मैंने असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के पंजीकृत प्रचारक, परीक्षक, संरीक्षक, प्राश्निक, प्रधान परीक्षक आदि विभिन्न काम किये।

मैं असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का आजीवन सदस्य हूँ। उसीसे मैं समिति की व्यावसायिक सभा का आजीवन सदस्य बना। मैंने समिति द्वारा प्रकाशित अहिंदी भाषी स्कूल की आठवीं श्रेणी की पाठ्यपुस्तक 'व्याकरण बोध' दूसरा भाग की रचना की है। यही पुस्तक समिति की प्रबोध परीक्षा की भी पाठ्यपुस्तक है।मुझे असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा संचालित गुवाहाटी हिन्दी विद्यापीठ के अंशकालीन अध्यक्ष पद पर 13 मार्च 1978 से 9 अक्टूबर 1984 तक सेवा करने का अवसर मिला। मैंने सन् 1983 में आठ महीनों तक असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के 'साहित्य सचिव' पद पर हिन्दी की सेवा की है।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से जुड़कर आपने असम में हिन्दी को बढ़ावा दिया है। इस संस्था के साथ आप कैसे जुड़े? वहाँ आपकी क्या भूमिका रही?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- मैं सन् 1965 में प्रागज्योतिष महाविद्यालय की नैश शाखा में बी. ए पढ़ रहा था। उसी समय कामरूप अकादेमी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के

शिक्षक स्व॰ नरेंद्र वैश्य भी वहाँ पढ़ा रहे थे। दोनों में दोस्ती हो गयी । उनसे मालूम हुआ कि उस स्कूल में शिक्षक स्व॰ तरुण आजाद डेका आकाशवाणी, गुवाहाटी केंद्र में नियोजित होने के कारण उनका पद खाली है। उन्होंने बताया कि अगर मैं वहाँ जाना चाहूँ, तो मैं स्कूल के अध्यक्ष से मिल सकता हूँ ।

इसके दूसरे दिन मैं अध्यक्ष से मिला। उन्होंने मुझे सात दिन के बाद बुलाया। निश्चित समय पर मैं अध्यक्ष से मिला। उन्होंने मुझे नौंवी श्रेणी में हिन्दी पढ़ाने भेजा। मेरा अध्यापन देखकर उन्होंने तुरंत नियुक्ति दे दी। कामरूप अकादेमी गुवाहाटी क्लब में है और उन दिनों असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति भी गुवाहाटी क्लब में ही थी। तो इस संस्था से सहज ही संबंध बन गया।असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति असम के सबसे पुरानी हिन्दी प्रचार संस्था है। सन् 1938 के 3 नवंबर को इस समिति की स्थापना हुई थी। समिति असम के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों की पाठ्य पुस्तकें प्रस्तुत करती है। अब समिति परिचय, प्रथमा, प्रवेशिका, प्रबोध, विशारद और प्रवीण परीक्षाएँ चलती है। इन परीक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें भी समिति व्यवस्था करती है। समिति के संचालन के लिए एक सभा है – जिसका नाम व्यवस्थापिका सभा है, जिसमें मैं आजीवन सदस्य के रूप में समिति की सेवा कर रहा हूँ ।

उसके बाद मैं समिति का पंजीकृत प्रचारक बना। फिर विद्यार्थियों को परिचय से प्रवीण तक के वर्गों की परीक्षाओं के लिए तैयार किया। साथ ही साथ मैं समिति की विभिन्न कामों में नियोजित हुआ । बाद में मैंने समिति द्वारा संचालित हिन्दी विद्यापीठ का अंशकालीन अध्यक्ष पद पर सात सालों तक सेवा की ।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *हिन्दी का अध्ययन और अध्यापन आपका क्षेत्र रहा। असम जैसे अहिंदी भाषी राज्य में हिन्दी आपके जीवन की साधना का केंद्र कैसे बनी?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- हिन्दी की गरिमा ही कुछ ऐसी है कि वह सबको अपना लेती है। हिन्दी हमारे देश के कई राज्यों की मूल भाषा है।हिन्दी सहज सरल और सुबोध भाषा है । इन्हीं विशेषताओं के कारण ही संविधान ने देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा को भारत की केन्द्रीय सरकार ने सन् 1949 के 14 सितंबर को हमारे देश की राजभाषा की स्वीकृति दी है । पर हाँ, भले ही संवैधानिक रूप से यह राजभाषा है, पर वास्तविक अर्थ

में यह देश की राष्ट्रभाषा है। इस देश के नागरिक होने के नाते हिन्दी सीखना और सिखाना हमारा कर्तव्य है। पूर्वोत्तर भारत में सैकड़ों भाषाएँ हैं। एक समुदाय दूसरी समुदाय की भाषा नहीं समझ सकता। इसीलिए असम सहित पूर्वोत्तर भारत के सभी राज्यों में हिन्दी संपर्क भाषा का काम कर रही है। हिन्दी ने मुझे आकर्षित किया और मैंने हिन्दी को विषय के रूप में चुना।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *हिन्दी के प्रचार के लिए आपने महत्वपूर्ण काम किया है। हमारे पाठकों को कुछ और सूचना दें।*

गोलोक चन्द्र वैश्य- असम हिन्दी के लिए काम करने की उर्वर भूमि है। मेरे साधन और सामर्थ्य के ज़ोर पर मैंने हिन्दी की सेवा की। मैंने कामरूप अकादेमी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी शिक्षक पद पर 38 वर्षों तक अध्यापन की सेवा की । आठवीं कक्षा की हिन्दी माध्यम की पाठ्यपुस्तक 'समाजविज्ञान चौथा भाग' के 'पौरविज्ञान खंड' का मैंने असमीया से हिन्दी में अनुवाद किया है । असम माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित हाईस्कूल शिक्षान्त परीक्षा के सन् 1980 से सन् 2004 तक परीक्षक, प्रधान परीक्षक, पुन: परीक्षक आदि विभिन्न कामों के दायित्व को निष्ठा से निभाने का प्रयास किया। मैं इसी परीक्षा के हिन्दी विषय के परीक्षक, संवीक्षक, प्रधान परीक्षक, पुन:परीक्षक आदि विभिन्न सेवा में नियोजित था। मैं समिति के विभिन्न परीक्षाओं के परीक्षक, संवीक्षक, प्राश्निक, प्रधान परीक्षक, पुन:परीक्षक आदि के विभिन्न कामों में नियोजित था। मैंने गुवाहाटी हिन्दी विद्यापीठ के कई सालों तक अध्यापक, अध्यक्ष पद पर हिन्दी प्रचार की सेवा की। मैं समिति द्वारा परिचालित कुछ विद्यालयों का परिदर्शक था। मैंने समिति की प्रबोध और अहिंदी भाषी स्कूलों की आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक 'व्याकरण बोध' दूसरा भाग की रचना की है। मैंने आठ महीने तक समिति के साहित्य सचिव पद पर रहकर समिति की पाठ्य पुस्तक प्रणयन और प्रकाशन का दायित्व निभाया। मैंने साहित्य का मुखपत्र 'राष्ट्रसेवक' (साहित्य सचिव पद पर रहते समय) का सम्पादन किया था। मैं समिति का आजीवन सदस्य था। सदस्य रूप में समिति संचालन में मैंने सक्रिय भूमिका ली है।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *असम राष्ट्राभाषा प्रचार समिति के अलावा आप हिंदी की किन किन संस्थाओं से जुड़े हुए हैं ?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अलावा अन्य कुछ संस्थाओं से भी मेरा संपर्क रहा है। असम राष्ट्रभाषा शिक्षक संस्था और हिन्दी विभाग प्राक्तन विद्यार्थी संघ, गुवाहाटी विश्वविद्यालय आदि संस्थाओं से मैं जुड़ा हुआ हूँ। असम राष्ट्रभाषा सेवक संघ- यह एक स्वेच्छासेवी हिन्दी शिक्षकों की संस्था है। असम के हिन्दी शिक्षकगण इसके सदस्य होते हैं। यह हिन्दी भाषा और हिन्दी शिक्षकों की समस्याओं का शांतिपूर्ण समाधान के लिए काम करता है। मैं संघ का आजीवन सदस्य हूँ। मैं इस संघ का उपाध्यक्ष भी था। असम माध्यमिक स्कूल की भाषा शिक्षक संस्था- हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी आदि भाषा शिक्षकों के दबाव के खिलाफ इस संस्था का गठन हुआ। मैं इस संस्था का प्रतिष्ठापक संपादक और एक सतीर्थ संपादक बना । हमने संस्था को मजबूत बनाकर हमारे प्रमोचन के लिए गुवाहाटी उच्च न्यायालय में केस दाखिल किया। केस में हमारी जीत हुई। गुवाहाटी विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग, प्राक्तन विद्यार्थी संघ की स्थापना हुई। मैं भी इस संस्था से जुड़ गया । इसकी स्थापना गुवाहाटी विश्वविद्यालय में सन् 2016 में हुई। संस्था के अधिवेशन के समय पर 'स्नेहिल' नामक स्मृतिग्रंथ निकाला जाता है। यह पत्रिका हिन्दी की समस्याओं के समाधान की मार्गदर्शिका है। मैं संस्था का उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *असम में आपकी तरह और भी हिन्दी सेवी हैं।*

गोलोक चन्द्र वैश्य- हाँ। असम में और कई हिन्दी सेवी हैं, जो पूरी निष्ठा से हिन्दी के विकास के लिए काम कर रहे हैं। कई तो गुजर गये। चित्र महंत ने कई रचनाओं से हिन्दी के विकास के लिए यहाँ काम किया था। नवारुण वर्मा ने असमीया साहित्य के अमूल्य ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया था। इनके अलावा भी उन्होंने उपन्यास लिखकर शेष भारत के लोगों को असम के समाज से परिचित करवाया था। छगनलाल जैन ने अनुवाद के साथ साथ कहानी और उपन्यास के द्वारा यहाँ हिन्दी की सेवा की। बापचन्द्र महंत ने शंकरदेव के साहित्य से शेष भारत के लोगों को परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। प्रो. हीरालाल तिवारी, प्रो. धर्मदेव तिवारी, डॉ. परेश चन्द्र देवशर्मा, डॉ. अजित दास, डॉ. माधव दास, डॉ. शांति थापा आदि ने हिन्दी के क्षेत्र में बहुत काम किये । डॉ. देवेन दास, प्रो. भूपेंद्रनाथ रायचौधुरी, डॉ. लक्षानंद

पाठक, डॉ. अच्युत शर्मा, डॉ. अमूल्य बर्मण, डॉ. नारायण तालुकदार, डॉ. छाया भट्टाचार्य, डॉ. भूषण पाठक, डॉ. किरण हाजरिका, दिनकर कुमार, डॉ. अदिति शाइकीया, डॉ. गोलोक डेका, डॉ. रीतामणि वैश्य, डॉ. हरेराम पाठक, डॉ. क्षीरदा शइकीया, रविशंकर रवि, सुशील चौधुरी, श्री सर्वेश्वर महंत, आदि के अलावा आप जैसे और अनेक हिन्दी के साधक हिन्दी में मौलिक एवं अनूदित रचनाओं के साथ-साथ इसके प्रचार-प्रसार में निरंतर लगे हुए हैं। और अनेक ऐसे ही हिन्दी सेवी हैं। वर्तमान भी असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और ऐसी ही दूसरी संस्थाओं से जुड़कर लोग हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में लगे हुए हैं।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *हिन्दी की आवश्यकता के संबंध में आपका क्या विचार है? खासकर पूर्वोत्तर में हिन्दी की संभावना के बारे में आप क्या कहेंगे?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- हिन्दी की आवश्यकता के दो पक्ष हैं। एक साहित्यिक और दूसरा भाषिक। साहित्य तो समाज की जीवनरेखा है। हर एक समाज में अपना साहित्य होता है। वह लिखित भी हो सकता है और अलिखित भी। उस साहित्य में अपने समाज का स्वरूप अंकित होता है। साहित्य हमें सत्य और सुंदरता का पाठ पढ़ता है। वह मूल्यबोध की शिक्षा देकर मनुष्य को मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठित करता है। हिन्दी का साहित्य अति प्राचीन और पुरातन भारतीय मूल्यों से समृद्ध है। इसीलिए हिन्दी का साहित्य निश्चित रूप से बहुमूल्य है।

रही बात हिन्दी के भाषिक पक्ष की, पूर्वोत्तर भारत में भाषा के रूप में हिन्दी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। पूर्वोत्तर भारत भाषाओं का संग्रहालय है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ चलती हैं और इन भाषाओं में एकरूपता का अभाव है। अतः इस भूभाग के निवासियों को भावात्मक एकता के सूत्र से पिरोने के लिए हिन्दी अति आवश्यक है। पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी निरंतर कार्यरत है।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *आज के विद्यार्थियों से आप हिन्दी के संबंध में क्या कहना चाहेंगे?*

गोलोक चन्द्र वैश्य- आज के विद्यार्थी बहुत तेज हैं, समझदार हैं। उन्हें अलग से कहने की आवश्यकता नहीं है। पहले हिन्दी पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को समझाना पड़ता था, पर अब सैकड़ों विद्यार्थी अपनी इच्छा से हिन्दी के प्रति आकर्षित हो रहे हैं और उच्च शिक्षा ले रहे

हैं। हिन्दी में रोजगार की बड़ी संभावना है। स्कूल, कॉलेज, ऑफिस आदि में हिन्दी की नियुक्ति की व्यापक संभावना है। इनके अलावा भी व्यापार-वाणिज्य में सफलता के लिए हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *आपने तो अपने घर में ही हिन्दी का माहौल बना लिया है।*

गोलोक चन्द्र वैश्य- हाँ। हमारे जमाने में वैसा ही होता था। जो पढ़ाई में आगे होता था, उसे अपने सगे-संबंधियों के बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी लेनी पड़ती थी। मैंने भी यह जिम्मेदारी उठायी। मैंने बहुतों को हिन्दी पढ़ाया और हिन्दी पढ़ाने के लिए प्रेरित भी किया। उनमें से मेरा साला, जिसे मैंने तीसरी कक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक पढ़ाने की पूरी जिम्मेदारी ली। उसे अपने साथ रखकर पढ़ाया। इसके अलावा मैंने चचेरे भाई, बहन आदि को भी हिन्दी पढ़ायी। मुझसे प्रेरित होकर मेरी बेटियों और नातिन ने भी हिन्दी में उच्च शिक्षा हासिल की। आज वे सभी असम के विविध विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय आदि में हिन्दी के अध्यापक हैं।

डॉ॰ मालविका शर्मा- *आपसे बातें करते हुए बहुत अच्छा लगा। हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए आपने कई महत्वपूर्ण काम किए। आप हिन्दी के विद्यार्थियों, पाठकों एवं हिन्दी प्रेमियों के लिए एक आदर्श हैं। आप आगे भी ऐसे ही हिन्दी की सेवा करते रहें। आपने मुझे इतना समय दिया। आपका बहुत बहुत आभार।*

गोलोक चन्द्र वैश्य- आपको भी बहुत धन्यवाद। असम तथा पूर्वोत्तर में हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास की कामना करता हूँ।

संपर्क सूत्र:

गोलोक चन्द्र वैश्य
विशिष्ट हिन्दी सेवी एवं भूतपूर्व शिक्षक
गणेश नगर, गुवाहाटी-29

डॉ॰ मालविका शर्मा
अध्यक्ष एवं सहयोगी अध्यापक, हिन्दी विभाग
राधागोविंद महाविद्यालय,गुवाहाटी